

---

# Dharmakritam 1 Shiva Stotram

धर्मकृतं १ शिवस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Dharmakritam 1 Shiva Stotram

File name : dharmakRRitaM1shivastotram.itx

Category : shiva, skandapurANa, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : skandapurANa | kAshIkhaNDa | uttarakhaNDa | adhyAya 78/32-41||

Latest update : June 24, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 24, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Dharmakritam 1 Shiva Stotram

---

### धर्मकृतं १ शिवस्तोत्रम्

---



धर्म उवाच ।

नमो नमः कारुण्यकारुणानां नमो नमः कारुण्यवर्जिताय ।

नमो नमः कार्यमयाय तुभ्यं नमो नमः कार्यविभिन्नरूपे ॥ ३२ ॥

अरूपरूपाय समस्तरूपिणे पराणुरूपाय परापराय ।

अपारपाराय पराब्धिपारप्रदाय तुभ्यं शशिभौलये नमः ॥ ३३ ॥

अनीश्वरस्त्वं जगदीश्वरस्त्वं गुणत्मात्मकस्त्वं गुणवर्जितस्त्वम् ।

कालात्परस्त्वं प्रकृतेः परस्त्वं कालाय कालात्प्रकृते नमस्ते ॥ ३४ ॥

त्वमेव निर्वाणपदप्रदोऽसि त्वमेव निर्वाणमनन्तशक्ते ।

त्वमात्मरूपः परमात्मरूपस्त्वमन्तरात्मासि चराचरस्य ॥ ३५ ॥

त्वत्तो जगत्त्वं जगदेव साक्षाज्जगत्त्वदीयं जगदेकबन्धो ।

उर्ताविता त्वं प्रथमो विधाता विधातृविष्वक्वीश नमो नमस्ते ॥ ३६ ॥

भृशस्त्वमेव श्रुतिवर्त्मगेषु त्वमेव भीमोऽश्रुतिवर्त्मगेषु ।

त्वं शङ्करः सोमसुभक्तिभाजामुग्रोऽसि रुद्र त्वमभक्तिभाजाम् ॥ ३७ ॥

त्वमेव शूली द्विषतां त्वमेव विनम्रयेतो वयसां शिवोऽसि ।

श्रीकण्ठ ऐकः स्वपदश्रितानां दुरात्मनां डालडलोग्रकण्ठः ॥ ३८ ॥

नमोऽस्तु ते शङ्कर शान्तशम्भो नमोऽस्तु ते यन्द्रकलावतंस ।

नमोऽस्तु तुभ्यं कृष्णिभूषणाय पिनाकपाण्डेऽन्धकवैशिणे नमः ॥ ३९ ॥

स अथ धन्यस्तव भक्तिभाग्यस्तवार्थको यः सुकृती स अथ ।

तव स्तुतिं यः कुरुते सदैव स स्तूयते दृश्यवनादि देवैः ॥ २.७८.४० ॥

कस्त्वामिड स्तोतुमनन्तशक्ते शक्नोति मादृग्लघुबुद्धिवैभवः ।

प्रायां न वायामिडगोचरो यः स्तुतिस्त्वयीयं नतिरेव यावत् ॥ ४१ ॥

इति श्रीस्काण्डपुराणे काशीभाण्डे पूर्वार्द्धे अष्टसप्ततितमा- ध्यायान्तर्गतं

धर्मकृतं शिवस्तोत्रं समाप्तम् ।

स्कन्दपुराण । काशीभाण्ड । उत्तरभाण्ड । अध्याय ७८/३२-४१ ॥

skandapurANa . kAshIkhaNDa . uttarakhaNDa . adhyAya 78/32-41..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Dharmakritam 1 Shiva Stotram*

pdf was typeset on June 24, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

